नियन्त्रित भी है। 'ब्रह्मसंहिता' में कहा है कि श्रीकृष्ण परमेश्वर हैं। यह सत्य है कि प्राकृत-जगत् तथा वैकुण्ठ-जगत्, दोनों में बहुत से ईश्वर हैं; परन्तु श्रीकृष्ण परमेश्वर हैं—**ईश्वरः परमः कृष्णः** और उनका श्रीविग्रह सच्चिदानन्दघन, अर्थात् अप्राकृत है।

पूर्वश्लोकों में वर्णित अद्भुत कार्यकलापों का सम्पादन प्राकृत कलेवर से नहीं हो सकता। इस प्रकार सिद्ध होता है कि श्रीभगवान् का विग्रह सच्चिदानंदमय है। निःसंदेह वे साधारण मनुष्य नहीं हैं, तथापि मूढ़ व्यक्ति उनका उपहास करते हैं और उन्हें साधारण मनुष्य ही मानते हैं। उनके वपु को यहाँ **मानुषीम्** कहा गया है, क्योंकि वे कुरुक्षेत्र के युद्ध में एक राजनीतिज्ञ और अर्जुन के सखा के रूप में ठीक नरवत् लीला कर रहे हैं। वे नाना प्रकार से साधारण मनुष्य के समान कार्य कर रहे हैं, पर वास्तव में उनका विग्रह सच्चिदानन्दमय है। वैदिक वाङ्मय में संपुष्टि है (**सच्चिदानन्दरूपाय कृष्णाय**) 'मैं सच्चिदानन्दघन भगवान् श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ।' वेदों में इस सत्य के अन्य प्रमाण भी उपलब्ध हैं: **तमेकं गोविन्दम्** 'आप इन्द्रियों और गोधन को रस का परिवेषण करने वाले श्रीगोविन्द हैं। **सच्चिदानन्द विग्रहम्**—'आपका विग्रह सांद्रांग सच्चिदानन्द है।'

श्रीकृष्ण के श्रीविग्रह में इन चिद्गुणों के होते हुए भी श्रीमद्भगवद्गीता के बहुत से नाममात्र के विद्वान् एवं व्याख्याकार श्रीकृष्ण को साधारण मनुष्य कहकर उनका उपहास उड़ाते हैं। पिछले पुण्यकर्म के फलस्वरूप ऐसे विद्वान् असाधारण प्रतिभावान् हो सकते हैं, परन्तु श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में इस प्रकार की भ्रान्त धारणा अल्पज्ञता की स्पष्ट परिचायक है। अतः ऐसे विद्वानों को 'मूढ़' कहा गया है, क्योंकि परमेश्वर श्रीकृष्ण की अंतरंग लीलाओं एवं शक्ति-वैचित्र्य को न जानने वाला मूर्ख ही उन्हें सामान्य मनुष्य समझने की धृष्टता करेगा। ऐसे मूढ़ नहीं जानते कि श्रीकृष्ण का विग्रह समग्र सत्, चित् और आनन्द का उत्स (निधान) है, वे ही सकल सृष्टि के स्वामी हैं तथा जीवमात्र को मुक्ति का दान कर सकते हैं। श्रीकृष्ण के इन चिन्मय गुणों को न जानकर मूढ़-मनुष्य उनका उपहास किया करते हैं।

मूढ़ यह भी नहीं जानते कि इस संसार में श्रीभगवान् का अवतरण उनकी आत्ममाया (अन्तरंगा शक्ति) का प्रकाश है। वे अपरा माया शक्ति के स्वामी हैं। जैसा बहुधा कहा गया है, **मम माया दुरत्यया।** उनकी घोषणा है कि अति प्रबला अपरा शक्ति माया सब प्रकार से उनके आधीन हैं; अतः उनके चरणारविन्द के शरणागत होकर जीव इसके नियन्त्रण से मुक्त हो सकता है। जब श्रीकृष्ण का शरणागत जीव भी माया से मुक्त हो जाता है, तो सम्पूर्ण अपरा प्रकृति के सृजन, पोषण एवं संहार के संचालक उन परमेश्वर का रूप हमारे समान पाञ्चभौतिक कैसे हो सकता है? अतः श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में ऐसी असत् धारणा एकदम मूढ़तापूर्ण है। फिर भी मूर्ख यह नहीं समझ सकते कि नराकार में अवतीर्ण हुए भगवान् श्रीकृष्ण अणु से लेकर विराट् विश्वरूप तक के ईश्वर कैसे हैं। बृहत्तम और अणुतम तत्त्व उनके लिये अचिन्त्य है, इसलिए वे यह सोच भी नहीं सकते कि एक नराकार विग्रह एक साथ